

अध्याय ९ वा

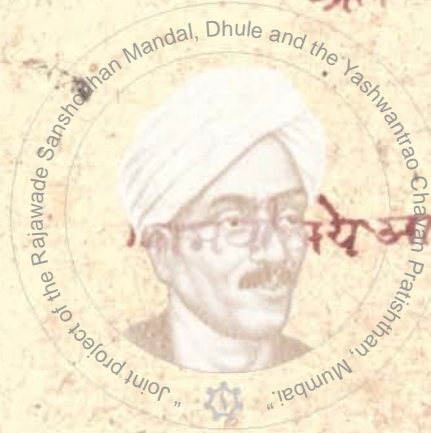
५.



आध्यानववा॥१॥

①

श्री॥



नामवसेध्या॥१॥

७

॥ श्रीकृष्णनाभायनमः ॥ नमो श्रीगुरुब्रह्मानंदा ॥ तुंजगदांकुरमूळकंदा ॥ जे
 निजजनतारकप्रसिद्ध ॥ वैवल्पादातासुखार्थी ॥ जो योगदिपावे स्थान
 ॥ जो वैराग्यवद्विभेंसुमन ॥ किंवेदांतसमुद्रियापिन ॥ आत्मजीवनीतळप
 तसे ॥ श्रीतो धैर्यप्रेरुवे वीरव ॥ वीदगावामिवाजळधर ॥ वीहपासागरी
 वेंसुंदर ॥ दीव्यरत्नेप्रगटति ॥ श्रीशान्तिवेंवेंद्रमंडळ ॥ श्रीतप्तज्ञसूर्यवे
 वळ ॥ श्रीसत्यसरोवरीवेंद्रमळ ॥ श्रीवां सुपूळआनंददृष्टा ॥ श्रीसुमेचाप
 र्वतपूर्ण ॥ द्विनिर्विकारदिव्यवंदन ॥ सुसुक्ष्मणीवरवेष्टुन ॥ सर्वदाहिबैस
 ले ॥ श्रीशुद्धब्रह्मभागीरथीवेंजळ ॥ तेशीवाज्जोटातिनिर्मळ ॥ भक्तीवि
 रक्तीज्ञानदेवळ ॥ तीर्थराजअवतरला ॥ ६ ॥ ऐसाप्राहाराजसद्गुरुनाथ
 ॥ त्यासीपरीसावादेउंदृष्टांत ॥ तो लोहावेंसुवर्णक्रीत ॥ परीआपणांहे



2A

संतकर वे ७ ॥ सुरभी श्रीतामणिं साचार ॥ व्रजवृक्षस्य णावाउदार ॥ त
रीतो व्रजलीले वीदेणार ॥ परी आपणां ऐसंतकर वे ८ ॥ जनव्रजननी
वीष्यमां वै सि ॥ द्याविआतां सुदुरसि ॥ तेविंहेउनिउत्ताइनिश्चयंसी ॥ ज
न्ममरणांसिदुरकरी ९ ॥ वीद्यासिउदयोनिंआमुप ॥ सर्वाठाइंआस
तिमायेवाप ॥ श्रीगुरुचीस्वरप ॥ जनाजन्सीवैंवाता ॥ १० ॥ जात्वइंधन
दहवृवैश्चान्नर ॥ आज्ञानतिगोरुदहवृदिवाकर ॥ व्रीडुःखपर्वतभंज
नपुरंदर ॥ बोधवचनसठवेवरी ॥ ऐसासाहाजगुरुनाथ ॥ त्यासित्री
ष्यविरक्तशरणपेत ॥ भ्रमरपद्मद्रोणीवैसत ॥ तैसंवरणरजंकुंटीतअ
से १२ ॥ व्रीस्युलिं गसिठेअनित ॥ व्रीजठविंडुपडेसरोवरांत ॥ व्रीसरीता
सागरिं ऐक्यहोत ॥ ऐसभक्तगुरुचरणी ॥ १३ ॥ व्रीमुसंतआटीजाआठंकार

3

॥ क्रींजळी वीराली जळगार ॥ क्रींतिरंगमोडोनि साचार ॥ येव्र निरउर
 लंजैसं ॥ १७ ॥ ऐसा गुरुवरणींमिळोन ॥ गुरु हास्यकरीति अनुदिन ॥ क्षीरा
 धीपाजि उपमन्य ॥ वीलुसेजेसा सर्वदा ॥ १८ ॥ क्रींज्यापह विमन वृणीं
 तिर्थ ॥ क्रींभीमंत वंद्र भागाभाजत ॥ तैसे भजनगंगंत पथार्थ ॥ गुरु
 भक्तवंद्यपैं ॥ १९ ॥ ऐसे हेव्रवांगुलतवन ॥ परमआनंदले संतसज्जन ॥
 धन्यधन्यह्यपौन ॥ तर्जेनिमल ॥ उल वेति ॥ २० ॥ ऐसें दैवुनश्रीधरें ॥ नम
 स्कारघातला प्रेमादरें ॥ ह्यणो लु श्रीरामव्रथा मृतपात्रें ॥ सादरश्रवणी
 वैसलां ॥ २१ ॥ तुह्रींज्ञानगंगे वेवो घनिर्मळ ॥ क्रींविवेव्रभु मीवीनिधा
 नें व्रेवळ ॥ क्रींनृपार्णवि वीजा हाजे संवळ ॥ क्षमांसी एवरीतळ पतसे
 ॥ २२ ॥ क्रींनवविधभक्ती वीदीपेंसुंदरें ॥ क्रींअनुभवशास्त्रा वीमंदिरें ॥ क्रीं

3A

पीकलीं आनंद क्षेत्रे ॥ समसमान बहुं कडे ॥ २० ॥ परोपकार नभी वी नष्टे
त्रे निर्मल ॥ परमगुण युक्त प्राये मराठे ॥ की शहर तें ग्राही वस कळे ॥
या ग्रंथ वेष्टी मिळति ॥ २१ ॥ क्रीगामकृशाकृमठी वेभ्रमर व्रीवां अवधा
नदे ते जळधरा ॥ माझे शहर आरुद निर्भर ॥ परी तुझी प्रीति ठेविली ॥ २२ ॥ रा
णवट पक्षी शुक्रयथार्थ त्या वे शहर व्रतं तटस्त ॥ होति वासुत्र जपं पित ॥
तै सं वी ये थं जाहाले ॥ २३ ॥ क्री वा वं बोलातां वाठक ॥ अत्यंत संतोशे
जनक ॥ तै सं शहा वं क्री तुद ॥ संत सनिं ररा वं ॥ २४ ॥ तरी आतां ह् तुकें
वीकरासलरा ॥ सादरता हे दिव्य अंठं वार ॥ मजला गिदे उनिथां सावा
रा ॥ संत जनिं गौरवा वं ॥ २५ ॥ वक्ता क्षेत्र पीकलें परी पुर्ण ॥ परी सादरता व
री पाही जे घन ॥ वीत्तव्या कुबहें आवर्षण ॥ तेणे मो उकरपति ॥ २६ ॥ बो

(4)

लतीसंतश्रोतेचतुर॥ तुसीववेणेंहेंसुधाकार॥ येणेंआमुवेवूर्णव
 कार॥ तुसजालेनिधीरें॥ २०॥ आसोआतावाग्वल्लिसुंदरी॥ वढेआये
 ध्याकांउमांखिवरी॥ तेथीवीप्रबेनिधीरी॥ मत्तवतुरीसेविजे॥ २१॥ प्रागे
 अष्टमाधाइंवन॥ ज्यानविपणीलीकोडउवंडुन॥ त्यावरीभृगुपति
 वाद्वहसन॥ रघुपतिआलाआयोधसी॥ वैवैइवाबंधुसाक्षात्॥ प
 रमप्रतापीसंग्रामजीत॥ मानहउनियांवेहंत॥ लग्नांसिआणीलाद
 शरथें॥ २०॥ श्रीशुकेवालाजसोहवापाडुन॥ आयोध्येसिआलापरतोना॥
 वैवैइसिह्यणेभरथत्रुघ्न॥ नेउंआपुल्याग्रमाते॥ २१॥ ऐकोनबंधुचेंव
 वण॥ येरीह्यणेजाआवव्यचेउन॥ परीरायातेंपुसोन॥ भगदोद्यांसीने
 रुजे॥ २२॥ दशरथासीपुसेसंग्रामजीत॥ मासयेवत्रुघ्नभरथ॥ स्वरा

>

58

ज्यासीने उनीलरीत ॥ दाखउं सदन आणुलें ॥ ७७ ॥ श्रीरुन थोडे दिवसांत ॥ पा
ठउन हे इ नसी घगत ॥ ऐसेंबो लुन निश्रीत ॥ मग उगारा हिलु ॥ ७८ ॥ भर
थ ह्यो श्रीरा मां वं बुन ॥ मजन ग मये क क्षण ॥ रघुपति वे शो वे वीण ॥
नरु वे मज आप्त कार्हि ॥ ७९ ॥ श्रीराम वं द्रु मिं व कोर ॥ मी वात क लु आं
बुधर ॥ राम सुर जी मिं व स स धार ॥ वि योग सह सामो से नां ॥ ८० ॥ श्रीराम
शे धा सां उ न ॥ इतर सु वें इ डी क ण ॥ पी पुत्रा तु ज्य अ न रा कु न ॥ प्रा णां ति हि
अ न न भ शी तो ॥ ८१ ॥ मुक्त फ लें ह स य कु न ॥ प्रा णां ति ही न स्प र्त्रे अ न्न ॥ व्र त्त
द मि वा वि हं ग म ये उ न ॥ बा भु क्ते की व द न वे से ॥ ८२ ॥ दू त म धु डु ग्ग स गो व रं ॥
ज ही सुर सं जा ली आ पा रं ॥ परी जी व ण सां रो नि ज क्क व रं ॥ व्र त्ता ते थं न जा ति
॥ ८३ ॥ ऐ सें बो ल तां भ र थ ॥ ने त्री अ प्ते अ ष्ट पा त ॥ मा ता ह्य पो थे क मा स प र्य त ॥

७

क्रमो नित्ये इजे सर्वे वी॥ ७० ॥ तुलं घावं मात्रु वचन ॥ भरथपुसे श्रीरामां सी
 येउन ॥ प्रग बोले ज्यान कि मन मोहन ॥ वारे जै वरी ये इजे ॥ ७१ ॥ भरथपुसे
 घने वेठे ॥ रघुविर चरण वंदिते ॥ वातुरंगद कसिद्द जाले ॥ रथी वै सले हो
 घेहि ॥ ७२ ॥ राधा दशाश्वेकु मर ॥ राम वरणे भ्रमर ॥ मातुळ ग्राभासी स
 लर ॥ दळभारे सी पावले ॥ ७३ ॥ इव उज्या गोधे सिमास लसु मण ॥ सर्वदा करी
 ति गुरु शोवन ॥ जैसे दशरथ के राजन ॥ रघुनंदन करीत सदा ॥ ७४ ॥ वशिष्ठ
 मुखे नित्य श्रवण ॥ श्रीराम वरीत आपण ॥ चतुःशरी वृद्धा प्रविण ॥ रघुनं
 दन जाहा उठा ॥ ७५ ॥ प्रग धनुर्वेद अभ्यास ॥ करीताहे परम पुरुष ॥ रंगभूमि
 साधुनि विशेष ॥ युध्य कळासी वृतसे ॥ ७६ ॥ वेणुं वरी घाली तां कुठार ॥ वीर
 त जाये जैसा डुर ॥ तैसि रामाया वी बुद्धि ति व्र ॥ तर्क आपार न गणवे ॥ ७७ ॥

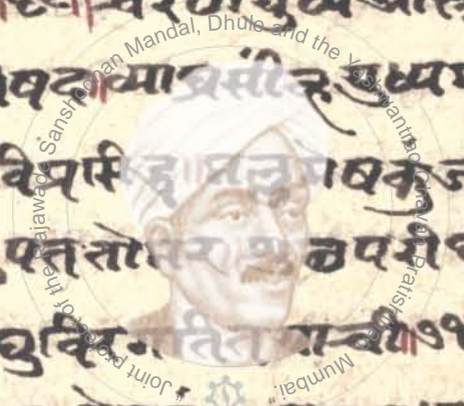
४

5A

वशिष्ठधनुष्यबाणधेउन॥सत्वरसोडुनदावितिजाण॥त्याहुनविशेषर
धुनंदन॥रंगमंडपीवैसलण॥७५॥आस्त्रशास्त्रविद्याप्रविण॥जालेराप्रघा
पीलशुभण॥तेपरीक्षावाहावयाआजनंदन॥रंगमंडपीवैसलण॥७६॥रं
गमंडपस्वीरचनां॥नवर्णदेवीसहस्रवदनां॥तेतेजाविलोकितांसहस्र
विर्णां॥परप्रअश्रीर्यवाटले॥७७॥वशांशुप्रभराप्रभुर्ण॥कोरीलकाइमिरीपा
षाण॥साचीपोवळीप्रभाघनसभावतिरवीयेली॥७८॥त्यामाजीसस्तरं
गीवाषाणा॥वक्रंजाळाचौक्रेयुण॥माजीघातआडुहुन॥पाहातांआ
श्रीर्यवाटतसे॥७९॥साधीलेपाचवंदआंगण॥गरुउपाचुचीतोतिंपूर्ण
॥नीह्यावेगजजोडुन॥तेवीतोठंबेदाविले॥८०॥त्यावरीहीमियावेस्तंभ॥
वरीवैडुर्यउशाळीस्वयंभ॥सुवर्णवेतुठवटहोसुप्रभ॥लंब्रायेमानप

(6)

जर याने फेरी ॥ सर्वे वीतुरंगारूढ हो ये श्रुत करी ॥ रथचमकता विना नाप
 री ॥ आनांत चक्रपै हें सं॥ ६५ ॥ वरणा युध्य आस्र युध्य ॥ शास्त्ररितीनां
 विध ॥ जळमंडळ युध्याविषदाया प्रसीरु युध्यगति ॥ ६६ ॥ वृक व्रशभनक्र
 युध्य ॥ अंतरीक्षभुमीतदाविपरिह ॥ प्रलयाषकजरयुध्य ॥ सप्रदळव्रणायु
 धदाविली ॥ ६७ ॥ शक्तिपाशुपत तो मरु ॥ षडपरीचरुदुष्टियक्र ॥ वं उक्रभीउ
 माळागजरवक्र ॥ हाविरघुविगतिरागवी ॥ ६९ ॥ याषाणआसीततामुद्द
 ल ॥ शतश्रीप्ररशकुंतसरळ ॥ येमदंश्राशह्वयुध्यसबळ ॥ पंत्रमंत्रयुध्यगति
 ॥ ७० ॥ येकसाडितांवीवाण ॥ क्रोथावधीह्रावेतयापासुन ॥ सबळवमुंसीर
 खेदन ॥ येकावीवाणोंकरावे ॥ ७१ ॥ आनिअस्त्रप्रजन्पास्त्र ॥ वातपर्वतआठे
 कज्ज ॥ पायनामगंधकस्त्र ॥ सुतहनुमंतनेरवास्त्रपै ॥ ७२ ॥ सींहपर्वआवीग

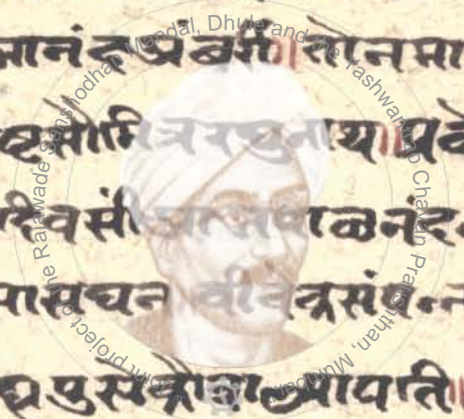


६

(6A)

दर्पणं चित्रं किं निजवदनम् ॥ तौ सार्द्धं तच्छुभं नेश्चरं ॥
शुभं ॥ अथेवो लतापंजातम् ॥ ७६ ॥ सौम्यं सीमं केशरं
वैरवुनेदम् ॥

रुद्रास्तु ॥ प्रायात्र ह्यत्र पेश्वर ॥ कामवैगायतारवासुर ॥ दाविरपुविरआसुरं
यै ॥ ७५ ॥ ब्रह्मगीरीविश्राजित ॥ याप्रस्तुगतिरधुनाथ ॥ तैसं वीकरीसुमित्र
सुत ॥ मानदशरथ उलुवि ॥ ७६ ॥ वाडीष्ट उठोनिते अवसरी ॥ श्रीगमसौमित्र
हृदइंधरी ॥ इशरथासजानंद प्रवरी ॥ तोनमापेतेव्हांसर्वथा ॥ ७७ ॥ सभावि
सर्नुनदशरथ ॥ वाडीष्टसौमित्ररधुनाथ ॥ प्रवेशतेजालेसदनांत ॥ आनं
दयुक्तसर्वहि ॥ ७८ ॥ येक्रेदिवसीं आसपाळनंदन ॥ अष्टाधीकारीप्रजात्राधि
जन ॥ सकळवेव्हारेवैसासघन ॥ वावक्रसंघनशोरथोर ॥ ७९ ॥ सकळ्हांसिबै
सउनियेक्रांति ॥ निजगुघ्रुसक्रीडाआपति ॥ ह्यणगरज्मद्यावेंश्रीगमाप्र
ति ॥ हेसंवीतिंवाटते ॥ ८० ॥ राज्यासिआवृरधुनायक ॥ जोगुणसमुद्रप्रताप
क ॥ जोधीरविरदेव ॥ लावण्यसागरश्रीराम ॥ ८१ ॥ आनंतजन्मीव्यातया



Project of the
Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and
Chhatrapati Sambhaji Pratishthan, Mumbai

(४)

वें प्र० ॥ तो हा श्री रामतमा नित ॥ राज्याचे वें हो ता ल्हा ॥ सुप्रो हर्त पाहो
 नियां ॥ ८३ ॥ ऐक्री निद्वारथा वें व वन ॥ संतोष ला ब्रह्म नंदन ॥ मान वले प्रजा
 जन ॥ स्रणति धन्य धन्य दशरथा ॥ ८४ ॥ वशिष्ठादि ऋषिसमस्त ॥ पाहो नियां
 सुप्रो हर्ते ॥ वैत्रमास अति विख्यात ॥ पुत्र पुत्र्य योग साधी लु ॥ ८५ ॥ श्री रामा
 सी द्या वयसा ज्यपट ॥ मुहूर्तने मले अति वीष्ट ॥ सर्व साधो ग्री व वीष्ट ॥ सी
 द्दक्री ता जाहा लु ॥ ८६ ॥ श्वेत रणे वेदंत ज ॥ क्षीर वर्ण आणी लु ह
 येत ज ॥ व्यामरं उत्रं तेज उंज ॥ मृगां द्रवर्ण सा जीरी ॥ ८७ ॥ सप्त सृत्ति द्वापं
 वप लु वपरी कर ॥ सप्त समुद्री वें आणी लें निर ॥ नुतन सिंहासन पवि
 त्र ॥ नुतन उत्र निर्मिते ॥ ८८ ॥ दिव्य मंडप निर्भुन ॥ तेथें मांदि लें सीं हासन ॥ ज
 पासि द्या व ले दि ॥ ब्रह्मणा ॥ वेदो नारा यण सा शात ॥ ८९ ॥ उपन दे श्री वेराजे

७४

श्रवणं श्राद्धं नवकुलीवेराजकुमरः॥ तेयेते जाले सत्वरः॥ आपारकूरभार
ये उतिशं॥ १५॥ अनंदमये आयोध्याधनगरः॥ सहनें श्रंगारी ली सुंदरः॥ आ
योध्यावासी नारी मरः॥ सभग्र आळं वार मंरि तः॥ १६॥ मजमंदिरें श्रंगारी ली
विशेषः॥ वरीशठवृत्तिरत्नजडितकठमः॥ उषां आषीतिसुरगणांसः॥ राजति
माजि स्वतेजं॥ १७॥ ये व्रांति बेला उतिरघुनाथः॥ गुह्यगोष्ठी सांगे दशरथ
॥ ह्रलो बोर मृही पीडा आलि बहवः॥ काठवियस्ति पुटें दिसे॥ १८॥ अष्टम
स्तानि श्रानेश्वर नी श्रीति॥ हा काळ तिंद हस्यति॥ मजलागि मृत्य वीने
जाणवति॥ वैसरघुपति सिंधुसावि॥ १९॥ रामा तु श्री मजवाट तेवंति॥ म
जरा कुनियां रघुपति॥ उरी जासील नी श्रीति॥ हं वीति वाटतसे॥ २०॥ तरी उ
वण्या मृतसागरा॥ तमाळनिळा व्यासगात्रा॥ रामाधनः शास्त्रा सुवक्रा॥ रा

8

॥ ५ ॥ भारवालवितुं ॥ ६ ॥ श्रीरामेवंहीलेपीत्रुचरण ॥ ह्यणेभजआतांवीप्र
 पाव्य ॥ रामासितेंडपोशण ॥ वरावेवंशिष्टेंतेदिवसी ॥ ७ ॥ राघुनाथाहाति
 शनें ॥ आपारवरवित्रीआनन्दनं ॥ रामानन्दनं ॥ रामानन्दनं ॥ कुशासति
 पदुडविति ॥ ८ ॥ जोपुरावपुरपपरन ॥ याहातिंरुषिद्वरवितिहोम ॥
 आहुतिघातितपुरघोतम ॥ ह्यतउरामऐकतो ॥ ९ ॥ वक्रोरावेमुर्वीअ
 रतधार ॥ वर्षजैसारोहिणीव ॥ क्रीडुंनहंघातिसत्वर ॥ वडासीत्रुस
 ह्यवया ॥ १० ॥ वीवच्छक्रावीपामुर्वीत ॥ मातस्तनपानं वरीत्रुस ॥ वीजळ
 बिंदुराकिआकस्मात् ॥ वातद्रमुखिंह्यपण ॥ ११ ॥ ऐसिअवदानंरामराकित ॥
 धुम्रंनेरुजातेआरक्त ॥ पज्ञनारायणजालात्रुस ॥ राघवहसेंक्रोनिपां
 ॥ १२ ॥ जैसिगोमतिआणीभागीरथी ॥ तैसीसुमित्राआणीक्रोशआसति ॥



88

की प्रांसिदाने जावार देति ॥ आनंद वीतिन समाये ॥ ७ ॥ दशरथासिनि रवी
 लक्ष्मण ॥ श्री श्री राम शो वाकरीन ॥ ऐकोमियां प्राजनंदन ॥ कुरवाळी वदन
 सुमित्रा वें ॥ ८ ॥ आयो ध्यानगर वेवोनी जाणां ॥ उत्तर प्रा राज्यां व्याप तुनं
 ॥ कौपाक्री तथा व्यागणानं ॥ पाहसां नय वि कुच वनिं ॥ ९ ॥ श्री धाम वै सले राज्य प
 टीं ॥ तो सो ह्वा पाहा वया दृष्टी ॥ सकल सुर वरां व्याक्री टी ॥ विमानां रू टपा
 हति ॥ १० ॥ तंत वितंत वन सुस्वर ॥ वत विधवा या वागजर ॥ नादं क्रों द ठें शं व
 र ॥ वीं तातुर सुर जाहाले ॥ वि वि र वि र वी ति क्र म ठे दे वा ॥ दशरथा राज्य स
 मर्षि गा घ वा ॥ आमु वे वं द सु ट के वा व र वा ॥ वि चार का हिं ही से नां ॥ ११ ॥ इंद्र प ह
 ल्य राज्य प्रा पु र्व ॥ ते सां डो नि यां शि ता ध व ॥ का स या पे इ ल द श ग्री व ॥ व
 धा व या वार णे ॥ १२ ॥ ती तो मंग ल जन नि वा व र ॥ भक्ता ना गी जाल सा व्रा श



९

॥ तरी तपो वनां सीये रघुविर ॥ ऐसा विचार यो जाव ॥ १४ ॥ मग विरं चीसां
 गे विरल्लासी ॥ तुवांस खर जावं आयोध्यासी ॥ प्रवेशावं कै कै इचे मानसी ॥ वी
 मराज यासी करावं ॥ १५ ॥ वीरल्लास प्रणने वेढा ॥ आयोध्या प्राजीपर पसो हठा ॥
 दुःख्या वयास ब्रह्मं ॥ प्राण्यानें ते ये न जाव ॥ १६ ॥ मासा प्रवेशा हे तां चीते
 शं ॥ वहुंता सि हो इ ल प्राणां ॥ प्राण लय र ची प्राणर्थ ॥ प्राण्यानें ते ये न जा
 व ॥ १७ ॥ सीत ठ हो इ ल क उं वा न ॥ मधुरता धरी ल हठा ट ॥ परी मज
 विरल्लास वेंब ॥ सीतान के ब्रह्मांति ॥ १८ ॥ देव ह्यणा वि तु ज विणा ॥ हें ब्रा
 र्गसा धील गा व व ॥ आम्हां ससो उ विंबं दिं हु न ॥ घे इं पुण्य ये रु डे तुं ॥ १९ ॥
 ऐसं ऐ कतां ची व व ॥ वीरल्लास नि घाला ते शु न ॥ ज व ठी के लें प्राणो
 ध्या पा ट ॥ त ही आंत प्रवेशा न कर वे ॥ २० ॥ आयो ध्या वा सी पुण्य इ ति ॥

१४

सत्यवादिमात्रिप्रप्रेमब ॥ ज्याकडेपाहंनसकेकाळ ॥ तेशेंविकल्पप्रवेश
 नां॥ १॥ ज्यासिवेदाज्ञांवाटेप्रज्ञाण ॥ नेणतियशवेदोषगुण ॥ सदासागसा
 रविवारश्रवण ॥ तेशेंविकल्पप्रवेशनां॥ १॥ जेकांनीश्रीगुरुभक्त ॥ जो
 मातापीतियासिभजत ॥ तेआनन्यब्राह्मणासिवंदित ॥ तेशेंविकल्पप्र
 वेशनां॥ २॥ दयाउपजेदोषकांदिन ॥ अंधशंभुवृहशीण ॥ त्यासिपाववी
 तवस्त्रअन्न ॥ तेशेंविकल्पप्रवेशनां॥ २॥ सदाआवडेहरीभजन ॥ श्रव
 णामननवरीकीर्तन ॥ परश्रम ॥ ज्यासिगुणसमान ॥ तेशेंविकल्पप्रवेशनां
 ॥ ३॥ सर्वभुतियेकरघुनाश ॥ ऐसीजयासिगुणप्रति ॥ प्रपंचीवर्ततांची
 विरक्त ॥ तेशेंविकल्पप्रवेशनां॥ ४॥ जेब्रह्मानंदेंपुणधाले ॥ जेआपआप
 णांविसरले ॥ तेशेंविकल्पावंबळनवले ॥ ब्रह्मांतिहिंसर्वथा ॥ ५॥ पर



(10)

ललनांमात्रुवत॥ जेवादप्रतिवादमुत्रेहोत॥ जेइश्वरस्वरूपवाहृतिस्त
 ॥ तेषं विकल्पप्रवेशनां॥ २०॥ आसोपुण्यवंतआयोधेवेजन॥ यांसिदे
 स्वतां विकल्पजायेपठान॥ प्रवेशादणआयोध्यापाटणा॥ धीरुनकेसव
 शा॥ २१॥ तांवेकैइवृद्धासिमथरा॥ तेषुर्विकीर्देखिरचुविरा॥ परमपापीणी
 तेरितावरा॥ सर्वदाहिनीक्षिता॥ २२॥ काशिंआहिओइरा॥ सजेसीआ
 सातिगमचंद्र॥ आरितांबळवी॥ रासांवीर्यालीतमे॥ २३॥ तोआंगावरि
 येतांकेर॥ हेतहतहोइलरचुविरा॥ मरणनिदासितेअपवित्र॥ रासांवीर
 जउउवि॥ २४॥ प्रतिहीऐसंक्ररीत॥ देवतांक्रोधवलाजनक्यामात॥ ह
 णतुंकुआहोसिलयथार्थ॥ कुरुपक्रसवीमि॥ २५॥ मगतेलागेगमाच्येपा
 शं॥ हणेमजलागिआतांउशायदेइं॥ मगजगदानंदकंदतेसमइं॥ काये



(108)

बोलतापेंजा ॥ ७ ॥ ह्रवो पुदीले आवतारीं पुण ॥ वंसवधावयासि म
थुरेसीयेइ न ॥ तेव्हां तुज उद्दरीन ॥ दीव्य क्रीनरुपतुझे ॥ १ ॥ आसो आघो
याबाहेर ॥ पुष्पवरीकापरमसुंदर ॥ सदा सुप्रबतरुवर ॥ वीव्र अस्व
रप्रालातेथें ॥ २ ॥ जो भंजन छेद न कुठार ॥ श्रीसिंहेंदाह व्र पुंरगौरवै
श्वप्नर ॥ क्रीप्रतिमेघविदारुसमिर ॥ परमतिव रूपजयावे ॥ ३ ॥ हा भज
नमार्गी वासारुमांग ॥ परदेव इत्या भसुद्रकाग ॥ द्वेषवारुंठांतिवु
जंग ॥ युसयुसीतवीव्र अहा ॥ जामदर वनि-वाटु शोर ॥ किंनिर्द
यसमुद्रि वानक ॥ क्रीपरतिंदा जय व्रवर ॥ वीव्र असावारु जागीजे ॥
४ ॥ वीव्र अनदेतेश्चान ॥ धां वेसाधु भक्तावरीवसवंसोन ॥ आनंदरस
पात्र उलंजेन ॥ सपामात्रांतराक्रीत ॥ ५ ॥ आसोहिंवर वृष्टी तो किं अ



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com